eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 08, August 2023

मोहभंग (Disenchantment), तर्कवाद और अतार्किकता (Irrational) का पुनरुत्थान– आधुनिकता के विरोधाभास एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

[1]डॉ धनन्जय कुमार कुशवाहा
[1]सहायक प्रोफेसर (समाजशास्त्र) भारतीय महाविद्यालय फर्रुखाबाद, उ0प्र0

Received: 20 August 2023, Accepted: 28 August 2023, Published with Peer Reviewed on line: 31 August 2023

Abstract

आधुनिकता को बुद्धि, तर्क और विज्ञान के युग के रूप में देखा गया था, जहाँ धार्मिकता, अंधविश्वास और मिथकीय व्याख्याएँ पीछे छूटनी थीं। मैक्स वेबर ने इसे मोहभंग कहा, जिसमें दुनिया को तर्कसंगत और वैज्ञानिक तरीकों से समझा जाना था। परंतु आज का यथार्थ इससे बिल्कुल भिन्न है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के चरम विकास के बावजूद, धार्मिक कट्टरता, अंधविश्वास, षड्यंत्र सिद्धांत, और छद्म विज्ञान फिर से समाज में फल–फूल रहे हैं। यह लेख आधुनिकता के इस विरोधाभास पर समाजशास्त्रीय चिंतन प्रस्तुत करता है। इसमें वेबर के तर्कवाद, आयरन केज, और अस्तित्वगत संकट की अवधारणाओं को आधार बनाया गया है। लेख यह विश्लेषण करता है कि क्यों तर्क और विज्ञान के विकास के बावजूद समाज पुनः अवैज्ञानिकता , अतार्किकता की ओर लौटता है।

इसके प्रमुख कारणों में सामाजिक अलगाव, वैश्वीकरण से उत्पन्न सांस्कृतिक असुरक्षा, डिजिटल मीडिया द्वारा फैलाई गई भ्रांतियाँ, और उपभोक्तावाद द्वारा इन तथ्यों जैसे अंधविश्वास और अन्य का वस्तु में बदल दी गई मान्यताएँ शामिल हैं। साथ ही, आदोर्नो, होर्खाइमर, हाबरमास, और बौमन जैसे चिंतकों के सिद्धांतों का उपयोग कर इस प्रवृत्ति को समझने का प्रयास किया गया है। निष्कर्ष के रूप में यह लेख तार्किकता के एक ऐसे रूप की आवश्यकता बताता है जो आत्म–निरिक्षक, समावेशी और मानवीय आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील हो। तभी हम आधुनिकता के इस संकट का समाधान खोज सकते हैं।

मुख्य शब्द– मोहभंग, तर्कवाद, अवैज्ञानिकता, आधुनिकता, ज्ञान का समाजशास्त्र

Introduction

आधुनिकता को ज्ञान, तर्क और विज्ञानवाद का युग माना गया था। इसमें ऐसा विश्वास था कि जैसे–जैसे विज्ञान और तर्क का विकास होगा, अनुष्ठानिक धार्मिकता, अंधविश्वास, मिथकीय सोच, स्वतः समाजों से समाप्त होती जाएगी। मैक्स वेबर ने इसे मोहभंग कहा, जहां पर दुनिया को अब देवी–देवताओं या रहस्यमय शक्तियों से नहीं, बल्कि कार्य और कारण की वैज्ञानिक व्याख्या से समझा जाएगा। लेकिन समकालीन समाज इस उम्मीद का पूरी तरह विरोधाभासी चित्र पेश करता है। विज्ञान, तकनीक, और तर्क की अभूतपूर्व प्रगति के बावजूद, समाज में अंधविश्वास, धर्मांधता, कुतर्क और छद्म विज्ञान का तेजी से पुनरुत्थान हो रहा है। लोग एक तरफ स्मार्टफोन और इंटरनेट का उपयोग करते हैं, तो दूसरी तरफ ज्योतिष, टोने–टोटके और बिना वैज्ञानिक प्रमाण वाले इलाज इत्यादि में विश्वास रखते हैं। यह विरोधाभास एक बड़ा समाजशास्त्रीय प्रश्न खड़ा करता है, क्यों आधुनिकता के युग में, जहाँ तर्क और विज्ञान का वर्चस्व है, वहीं अवैज्ञानिक सोच और आस्था का पुनर्जागरण हो रहा है? क्या यह आधुनिकता की असफलता है या तर्क की सीमाएँ हैं? क्या यह प्रतिक्रिया है उस जीवन के विरुद्ध, जो मशीनों, आंकड़ों और नियमों में जकड़ा हुआ है?

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 08, August 2023

यह लेख इसी प्रश्न का उत्तर तलाशने का प्रयास है। इसमें हम वेबर की आयरन केज अवधारणा, अस्तित्वगत संकट, वैश्वीकरण से उपजी सांस्कृतिक बेचैनी, डिजिटल युग में फेक न्यूज़ और पॉपुलिज़्म की भूमिका, और उपभोक्तावाद द्वारा अवैज्ञानिकता के व्यावसायीकरण का विश्लेषण करेंगे। यह समझने की कोशिश हैं कि अवैज्ञानिकता का यह पुनरुत्थान केवल अतीत की ओर लौटना ही नहीं है, बल्कि आधुनिकता की अपूर्णता का ही एक दर्पण है।

मोहभंग और तर्कवाद की अवधारणा – मैक्स वेबर ने आधुनिकता को समझने के लिए मोहभंग की धारणा दी है। उनका मानना था कि प्राचीन और मध्यकालीन समाजों में दुनिया को देवताओं, आत्माओं और रहस्यमय शक्तियों के माध्यम से समझा जाता था। लेकिन आधुनिक युग में विज्ञान, तर्क, और गणना ने उपर्युक्त के माध्यम से समझने की धारणा को पीछे छोड़ दिया हैं। अब दुनिया की प्रत्येक तथ्य, वस्तु, विचार, परिणाम को कारण और प्रभाव के सिद्धांत से समझा जाता है, न कि चमत्कारों या ईश्वरीय हस्तक्षेप से। वेबर ने इस प्रक्रिया को तर्कीकरण कहा, जहाँ समाज के सभी क्षेत्रों धर्म, राजनीति, अर्थव्यवस्था को नियम, योजनाओं और तर्कसंगत विधियों से संचालित किया जाने लगा। उन्होंने इसे साध्य–साधन तर्कवाद कहा, जिसमें हर कार्य का उद्देश्य स्पष्ट होता है और उसे प्राप्त करने के लिए उपलब्ध विकल्प में से सबसे कुशल तरीका अपनाया जाता है। हालाँकि, वेबर ने तर्कवाद की इस प्रगति को पूरी तरह सकारात्मक नहीं माना। उन्होंने चेतावनी दी कि यह तर्कवाद मनुष्य को आयरन केज में कैद कर सकता है एक ऐसा पिंजरा जो नियमों, नौकरशाही, और प्रक्रियाओं से बना है, जहाँ व्यक्ति की रचनात्मकता, भावनाएँ और जीवन का उद्देश्य खो जाता है। इस विमोहित (मोहभंग) दुनिया में सब कुछ गणना योग्य है, लेकिन जीवन का अर्थ क्या हैं , मैं कौन हूं, इसका उत्तर नहीं मिलता। और यह स्थिति इंसानों को भावनात्मक और आध्यात्मिक शून्यता की ओर ले जाती है। जब जीवन केवल तर्क और नियमों तक सीमित हो जाता है, तो लोग उस अर्थ की तलाश में पुनः धर्म, रहस्यवाद, या करिश्माई नेताओं की ओर लौटने लगते हैं। इस प्रकार वेबर की मोहभंग' की अवधारणा आधुनिक समाज की उस त्रासदी को उजागर करता है, जहाँ तर्क और विज्ञान के बावजूद मनुष्य का मन किसी गहरे अर्थ, रहस्य और अनुभूति की ओर आकर्षित होता है। यही आकर्षण आधुनिक समय में अवैज्ञानिकता के पुनर्जागरण की जड़ में है।

आधुनिकता का 'आयरन केज' और अस्तित्वगत संकट– आयरन केज का अर्थ केवल नौकरशाही और नियमों में बंधी व्यवस्था नहीं है, बल्कि यह मनुष्य की मानसिक, भावनात्मक और अस्तित्वगत स्थिति का भी प्रतीक है। आधुनिकता ने जिन तर्कसंगत संस्थाओं, तकनीकी व्यवस्थाओं और प्रशासनिक प्रक्रियाओं को खड़ा किया, उन्होंने जीवन को अधिक संगठित और अनुशासित तो बना दिया, लेकिन इसके साथ ही उसने मनुष्य को एक मशीन का पुर्जा बना दिया हैं।

जब हर चीज़ जैसे सम्बंध, कार्य, शिक्षा और धर्म तर्क, गणना और उत्पादकता के पैमानों पर मापी जाने लगे, तब जीवन का सहज आनंद, आत्मीयता और क्यों जी रहे हैं? जैसे मूल प्रश्न अप्रासंगिक होते चले जाते हैं। और इस खालीपन को ही वेबर ने आधुनिकता का संकट कहा। ऐसे में मनुष्य केवल आर्थिक गतिविधियों या कसी हुई सामाजिक भूमिकाओं में नहीं जी सकता हैं। उसे अर्थ, पहचान और समुदाय की आवश्यकता होती है। जब आधुनिकता यह देने में असफल होती है, तो मनुष्य उनकी तलाश में पुनः उस ओर लौटता है जो उसे भावनात्मक, आध्यात्मिक, या सांस्कृतिक सम्बल देती हैं चाहे वह अवैज्ञानिक ही क्यों ना हों। चार्ल्स टेलर जैसे दार्शनिकों ने इसे अर्थ का संकट कहा, जबकि एंथनी गिडेन्स ने डिसएम्बेडेडनेस

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 08, August 2023

(Disembeddedness) यानि पारंपरिक सम्बंधों और मान्यताओं से कटाव के रूप में व्याख्यायित किया। नतीजन आधुनिक समाज का नागरिक बाहर से तर्कशील और वैज्ञानिक दिखता है, पर भीतर से अस्थिर, शून्य और असुरक्षित महसूस करता है। यही स्थिति उसे पुनः धर्म, रहस्यवाद, और अतार्किक विश्वासों की ओर खींचती है। इस प्रकार, आयरन केज केवल एक ढांचा नहीं, बल्कि एक मानसिक और आध्यात्मिक कारागार बन जाता है।

अवैज्ञानिकता का पुनरुत्थान, स्वरूप और अभिव्यक्तियाँ– आज का युग जहाँ एक ओर वैज्ञानिक उन्नति और तकनीकी प्रगति का है, वहीं दूसरी ओर समाज में अवैज्ञानिकता का नया उभार देखा जा रहा है। यह पुनरुत्थान केवल पिछड़े या अनपढ़ समाजों या तबकों, वर्गों और समूहों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि शिक्षित, शहरी और तकनीकी रूप से दक्ष वर्ग भी इसका हिस्सा बन चुका है। इसका सबसे स्पष्ट रूप धार्मिक कट्टरता और मूलवाद (ethnocentrism) में दिखता है। दुनिया भर में धार्मिक पहचान को राजनीति से जोड़कर प्रस्तुत किया जा रहा है भारत में हिन्दुत्व, अमेरिका में ईसाई कट्टरता, और इस्लामिक देशों में इस्लामिक कट्टरपंथ इसके उदाहरण हैं। यह पुनरुत्थान आधुनिकता द्वारा उत्पन्न नैतिक संकट और धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक असुरक्षा का सीधा उत्तर हैं, जो भावनात्मक सुरक्षा और पहचान का आश्वासन देते हैं। दूसरा प्रमुख रूप छद्म विज्ञान और वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों के प्रचार में दिखता है। जैसे बिना किसी वैज्ञानिक प्रमाण के चमत्कारी उपचार, ज्योतिष, रत्न, एनर्जी हीलिंग, वास्तु शास्त्र आदि का प्रचलन तेजी से बढ़ा है। लोग एक ही समय में स्मार्टफोन का प्रयोग करते हैं और साथ में ग्रह–नक्षत्रों की चाल से भविष्य तय करते हैं। एक अन्य स्वरूप अवैज्ञानिक सिद्धांतों का प्रसार है जैसे जलवायु परिवर्तन को झूठा बताना, वैक्सीन विरोध, या इसी प्रकारों में विश्वास। ये विश्वास अक्सर सरकारी और वैज्ञानिक संस्थाओं में अविश्वास से जन्मते हैं, जहाँ लोगों को लगता है कि सच्चाई छिपाई जा रही है। उपभोक्तावादी संस्कृति भी इस पुनरुत्थान में सहायक रही है। बाज़ार ने आध्यात्मिकता, रहस्यवाद और स्वास्थ्य को उत्पादों (commodification) में बदल दिया है जैसे क्रिस्टल, टैरो कार्ड, योगा रिट्रीट, वैकल्पिक चिकित्सा के कोर्स। कंपनियाँ अर्थ और शांति को बेचने लगी हैं।

डिजिटल मीडिया और सोशल नेटवर्किंग साइट्स ने इस प्रक्रिया को और तेज़ कर दिया है। सोशल मीडिया के एल्गोरिद्म सनसनीखेज और भावनात्मक कंटेंट को प्राथमिकता देते हैं, जिससे भ्रांतियों और अवैज्ञानिक बातों का तेजी से प्रचार होता है। इस प्रकार अवैज्ञानिकता का पुनरुत्थान केवल परंपरा की वापसी नहीं है, बल्कि आधुनिकता की असफलताओं के प्रति एक प्रतिरोध और सांत्वना भी है, जो आधुनिक जीवन के भावनात्मक और आध्यात्मिक शून्य को भरने का प्रयास करता है।

अवैज्ञानिकता के पुनरुत्थान के कारण, अलगाव(Alienation), वैश्वीकरण और सांस्कृतिक बेचौनी– आधुनिक समाज में अवैज्ञानिकता के पुनरुत्थान के पीछे कई गहरे सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक कारण हैं। पहला कारण है अलगाव (Alienation), जिसे कार्ल मार्क्स और मैक्स वेबर दोनों ने व्याख्यायित किया। जब लोग अपने काम, समाज, और यहाँ तक कि स्वयं से कट जाते हैं, तो जीवन अर्थहीन और यांत्रिक लगने लगता है। अलगाव मनुष्य को किसी ऐसे भावनात्मक और आध्यात्मिक सहारे की तलाश में ले जाता है, जो उसे पुनः पहचान और उद्देश्य दे सके भले ही वह अवैज्ञानिक हो।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 08, August 2023

दूसरा बड़ा कारण वैश्वीकरण है। वैश्वीकरण ने विश्व का एकीकरण किया, पर इसके साथ सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक, नैतिक असुरक्षा और पहचान का संकट भी गहराया है। जब स्थानीय संस्कृतियाँ और मूल्य वैश्विक उपभोक्तावाद में खोने लगते हैं, तो लोग अपनी सांस्कृतिक जड़ों को तलाशते हैं। इसी कारण धार्मिक कट्टरता, सांस्कृतिक शुद्धतावाद, और परंपरागत विश्वासों की वापसी होती है। यह एक प्रकार की प्रतिक्रिया है, जिससे लोग खुद को वैश्विक अस्थिरता से बचाना चाहते हैं।

तीसरा कारण है अर्थ का संकट (Crisis of Meaning)। जब जीवन केवल उत्पादकता, डेटा और प्रौद्योगिकी में सिमट जाता है, तो मैं कौन हूँ? जीवन का उद्देश्य क्या है? जैसे प्रश्न उत्तरहीन रह जाते हैं। Zygmunt Bauman ने इसे 'Liquid Modernity' कहा, जहाँ जीवन के रिश्ते, करियर, और पहचानें सब कुछ अस्थिर और परिवर्तनशील हो गई है। इस अस्थिरता के कारण मनुष्य फिर उन विश्वासों की ओर लौटता है जो स्थिरता और भावनात्मक सुरक्षा का वादा करते हैं।

चौथा कारण है वैज्ञानिक और राजनीतिक संस्थाओं में अविश्वास। जब विज्ञान, सरकार और मीडिया लोगों की वास्तविक समस्याओं जैसे आर्थिक असमानता, पर्यावरण संकट, और मानसिक स्वास्थ्य जैसे विषयों का समाधान नहीं कर पाते, तब जनता में उनके प्रति अविश्वास पनपता है। ऐसे में लोग वैकल्पिक और अवैज्ञानिक व्याख्याओं में भरोसा करने लगते हैं।

अंततः, नियंत्रण और निश्चितता की मनोवैज्ञानिक आवश्यकता भी कारण है। महामारी, जलवायु परिवर्तन, आर्थिक संकट जैसे अनिश्चित दौर में लोग सरल और स्पष्ट उत्तरों की ओर भागते हैं। धार्मिक व्याख्याएँ, और रहस्यवादी विश्वास इसी आवश्यकता की पूर्ति करते हैं। अर्थात अवैज्ञानिकता का यह पुनरुत्थान आधुनिकता के मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संकटों का प्रतिबिंब है।

डिजिटल मीडिया, पॉपुलिज़्म और छद्म विज्ञान– डिजिटल मीडिया और सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म्स ने अवैज्ञानिकता और भ्रम फैलाने में अभूतपूर्व भूमिका निभाई है। फेसबुक, यूट्यूब, ट्विटर, व्हाट्सएप जैसे माध्यमों ने सूचना को लोकतांत्रिक तो बना दिया, लेकिन इसके साथ झूठ, षड्यंत्र, और छद्म विज्ञान को भी तेजी से फैलाया। इन प्लेटफ़ॉर्म्स के एल्गोरिद्म ऐसे कंटेंट को प्राथमिकता देते हैं जो सनसनीखेज, भावनात्मक और उत्तेजक हो। तथ्यपरक, वैज्ञानिक जानकारियाँ अक्सर उबाऊ या जटिल लगती हैं, जबकि षड्यंत्र, रहस्य, और चमत्कार से जुड़ी बातें ज्यादा क्लिक और शेयर बटोरती हैं। इससे गलत जानकारियाँ और अवैज्ञानिक विचार ज्यादा तेज़ी से फैलते हैं।

पॉपुलिस्ट राजनीति ने भी इस माहौल का लाभ उठाया है। पॉपुलिस्ट नेता अक्सर विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों और शैक्षणिक संस्थानों को elitist कहकर खारिज करते हैं। वे भावनात्मक, सांस्कृतिक पहचान पर आधारित भाषण देते हैं, जिसमें तथ्यों की जगह आस्थाएँ और भावनाएँ हावी रहती हैं। इससे अवैज्ञानिकता को सामाजिक और राजनीतिक वैधता मिलती है। इसके अलावा, डिजिटल मीडिया ने स्वयंभू गुरु वैकल्पिक चिकित्सक, और तथाकथित विशेषज्ञों को मंच दे दिया है, जो विज्ञान विरोधी या छद्म वैज्ञानिक विचारों को बड़े आत्मविश्वास से फैलाते हैं। आम आदमी के लिए यह तय करना मुश्किल हो जाता है कि कौन सच बोल रहा है। इस तरह, डिजिटल युग ने सूचना का लोकतंत्रीकरण तो किया, लेकिन साथ ही अज्ञान का भी लोकतंत्रीकरण कर दिया। इसका नतीजा है कि वैज्ञानिक तर्क के साथ–साथ अवैज्ञानिकता भी समाज में उतनी ही मजबूत होती जा रही है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 08, August 2023

अतार्किकता, अवैज्ञानिकता का व्यावसायीकरण, पूंजीवाद और उपभोक्ता संस्कृति– आधुनिक पूंजीवादी व्यवस्था ने न केवल उत्पादों और सेवाओं का बाज़ारीकरण किया है, बल्कि अब विश्वास, आध्यात्मिकता और अवैज्ञानिकता का भी व्यावसायीकरण कर दिया है। बाजार ने अवैज्ञानिक धारणाओं को एक उत्पाद में बदल दिया है, जिसे लोग अपनी पहचान, शांति और भलाई की तलाश में खरीदते हैं। उदाहरण के लिए, आज हीलिंग क्रिस्टल, ज्योतिषीय परामर्श, टैरो कार्ड, वास्तु शास्त्र, और एनर्जी हीलिंग जैसी सेवाएँ बड़ी मात्रा में बेची जा रही हैं। इनके पीछे वैज्ञानिक आधार कम है, पर भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक राहत का वादा इन्हें आकर्षक बनाता है। उपभोक्तावादी संस्कृति ने इन्हें वेलनेस और लाइफस्टाइल के नाम पर प्रतिष्ठित बना दिया है।

विज्ञापन उद्योग भी इस प्रवृत्ति को बढ़ावा देता है। ब्रांड अपने उत्पादों के साथ चमत्कारिक परिणाम, भावनात्मक तृप्ति, और जीवन में बदलाव का संदेश जोड़ते हैं। यह एक प्रकार की मायावी सोच (Magical Thinking) है, जहाँ किसी वस्तु को खरीदने मात्र से जीवन सुधरने का भ्रम फैलाया जाता है। डिजिटल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म भी सनसनीखेज और अवैज्ञानिक कंटेंट से मुनाफा कमाते हैं, क्योंकि ये कंटेंट ज्यादा क्लिक, व्यूज़ और विज्ञापन लाते हैं। इसीलिए छद्म विज्ञान और रहस्यमय विचारों का बाज़ार दिन–ब–दिन फलता–फूलता जा रहा है। इस प्रकार पूंजीवाद ने न केवल अवैज्ञानिकता को वैधता दी है, बल्कि इसे एक लाभकारी व्यापार में भी बदल दिया है।

आलोचनात्मक सिद्धांत, आदोर्नो, हाबरमास और बौमन– आलोचनात्मक सिद्धांतकारों ने आधुनिकता में अवैज्ञानिकता के बने रहने को गहराई से समझाया है। थिओडोर आदोर्नो और मैक्स होर्खाइमर ने अपनी पुस्तक Dialectic of Enlightenment (1947) में कहा कि आधुनिकता का तर्कवाद, जो मानव मुक्ति का वादा करता था, स्वयं ही दमन का उपकरण बन गया। सांस्कृतिक उद्योगों ने जनमानस को नियंत्रित करने के लिए लोकप्रिय संस्कृति और छद्म विज्ञान का प्रयोग किया, जिससे जनता भावनात्मक रूप से तृप्त लेकिन बौद्धिक रूप से शिथिल हो गई।

हाबरमास ने The Theory of Communicative Action (1984) में संचार तर्कवाद (Communicative Rationality) की बात की, जहाँ संवाद, समझ और आलोचना से समाज बेहतर हो सकता है। लेकिन आधुनिक समाज में जब बाजार और नौकरशाही जीवन के हर क्षेत्र को नियंत्रित करते हैं, तब संवादहीनता बढ़ती है, और लोग सरल, भावनात्मक और अवैज्ञानिक विकल्पों की ओर मुड़ते हैं। जिगमंट बौमन ने 'Liquid Modernity' की अवधारणा में बताया कि आधुनिक जीवन में सब कुछ अस्थिर है नौकरी, रिश्ते, पहचान। इस अस्थिरता से उपजी असुरक्षा लोगों को कट्टर, निश्चित और स्थायी उत्तरों की ओर मोड़ देती है, भले ही वे अवैज्ञानिक हों। इन तीनों विचारकों का निष्कर्ष है कि अवैज्ञानिकता आधुनिकता की विफलताओं का परिणाम है, जो मनुष्य की सामाजिक, भावनात्मक और सांस्कृतिक ज़रूरतों को अनुत्तरित छोड़ देती है।

निष्कर्ष– प्रतिबिंबात्मक तर्कवाद की ओर – आधुनिकता के इस विरोधाभास में जहाँ तर्क और विज्ञान का विकास हुआ, वहीं अवैज्ञानिकता और अंधविश्वास का पुनरुत्थान भी देखने को मिला। यह सिर्फ ज्ञान की कमी का परिणाम नहीं, बल्कि आधुनिक जीवन में फैले अलगाव, अस्तित्वगत संकट, सांस्कृतिक असुरक्षा और संवादहीनता का संकेत है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 08, August 2023

इस संकट से बाहर निकलने के लिए केवल वैज्ञानिक ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है। आवश्यकता है प्रतिबिंबात्मक तर्कवाद (Reflexive Rationality) की अर्थात एक ऐसा तर्कवाद जो आत्म–निरिक्षक हो, जो अपनी सीमाओं को समझे, और जो भावनाओं, सांस्कृतिक विविधता, और अस्तित्वगत सवालों को भी महत्व दे। हाबरमास का संचार तर्कवाद बताता है कि समाज में खुला संवाद, आलोचनात्मक सोच और विविध दृष्टिकोणों की स्वीकार्यता ही मानव मुक्ति और शांति का रास्ता है। शिक्षा व्यवस्था को केवल तथ्य सिखाने के बजाय आलोचनात्मक सोच, मीडिया साक्षरता, और सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देना चाहिए।

अंततः, आधुनिकता को खुद को पुनः परिभाषित करना होगा जिसमें तार्किकता के साथ , मानवता के गहरे भावनात्मक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पक्षों को समझने वाले युक्तियुक्त पक्षों का भी समाधान समग्रता के साथ प्रस्तुत करे, तभी हम तर्क और आस्था, विज्ञान और संस्कृति के बीच संतुलन बना सकेंगे।

संदर्भ सूची–

1. Weber, M. (1905). The Protestant Ethic and the Spirit of Capitalism. Routledge.
2. Weber, M. (1919). Science as a Vocation. In H. Gerth & C. Wright Mills (Eds.), From Max Weber: Essays in Sociology. Oxford University Press.
3. Adorno, T. W., & Horkheimer, M. (1947). Dialectic of Enlightenment. Verso.
4. Habermas, J. (1984). The Theory of Communicative Action. Beacon Press.
5. Bauman, Z. (2000). Liquid Modernity. Polity Press.
6. Giddens, A. (1991). Modernity and Self-Identity: Self and Society in the Late Modern Age. Stanford University Press.
7. Campbell, C. (1987). The Romantic Ethic and the Spirit of Modern Consumerism. Blackwell.
8. Han, B. C. (2017). Psychopolitics: Neoliberalism and the New Power. Verso.
9. Comaroff, J., & Comaroff, J. (2000). “Millennial Capitalism: First Thoughts on a Second Coming.” Public Culture, 12(2), 291-343.
10. Latour, B. (1991). We Have Never Been Modern. Harvard University Press.